स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम | एक नवीन मॉडल

भार्गव श्री प्रकाश

स्कूल का एक वैज्ञानिक स्वास्थ्य कार्यक्रम

भविष्य की पीढ़ियों को गढ़ने में शिक्षा की भूमिका सदैव शक्तिशाली रहेगी। वर्तमान कोविड-19 महामारी एक ऐसा समय है जिससे बहुत कुछ सीखकर समाज को पुनः निरूपित किया जा सकता है।

भारत भारी चुनौतियों से जूझ रहा है क्योंकि कोविड -19 ने हमारी जीवनशैली को बदल दिया है, अतः हमें सामान्य स्थिति को बहाल करने का प्रयास करना चाहिए। चूँकि शारीरिक दूरी बनाने से सम्बन्धित दिशा-निर्देशों का पालन करने की अपेक्षा बच्चों से नहीं की जा सकती, इसलिए उनके संक्रमित संचारक और अ-लक्षणी वाहक बनने का अधिक ख़तरा होता है। अध्ययनों से पता चला है कि संयुक्त राज्य अमरीका और दक्षिण कोरिया में स्कूलों को फिर से खोलने पर बच्चे वायरस से संक्रमित हुए और उन्होंने उसे फैलाया। इसके अतिरिक्त, शोधकर्ताओं ने पुष्टि की है कि कोविड-19 होने के कुछ महीनों बाद उसके दुबारा होने की सम्भावना रहती है क्योंकि प्रतिरक्षा प्रणाली वायरस से लड़ने की क्षमता खो देती है।

एक महत्त्वपूर्ण मोड़

इसलिए यह बात महत्त्वपूर्ण है कि इन वर्तमान परिस्थितियों में और कोविड-19 के बाद वाले भारत में भी बच्चों की सुरक्षा भली-भाँति की जाए। एक तरीक़ा यह है कि स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों और उनके परिवार को स्वच्छता और जीवन शैली के उन परिवर्तनों के बारे में शिक्षित किया जाए जो संक्रमण को रोकने के साथ स्वास्थ्य संवर्धन भी कर सकते हैं। यह अप्रत्याशित संकट, इतिहास के पन्नों में एक ऐसे मोड़ के रूप में दर्ज़ हो सकता है जब हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से, स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक बहुत बड़े परिवर्तन की शुरुआत हुई। यदि स्कूल आधारित स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम में माता-पिता और देखभाल करने वालों को शामिल कर लिया जाए तो इससे यह कार्यक्रम कई गुना अधिक प्रभावी हो सकता है। इसके लिए हमारा क़दम हो सकता है - एक साक्ष्य-आधारित मॉडल, जिसे बड़े पैमाने पर लागू किया जा सके और जो स्वास्थ्य-असमता को कम करने में भी मदद कर सके।

> स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतों के विकास में स्कूल एक प्रमुख भूमिका निभा सकते हैं। वे बच्चों को वैज्ञानिक सह-पाठ्यक्रम के माध्यम से पढ़ा सकते हैं और अभिभावकों को उसके साथ जोड़ सकते हैं। कक्षा और स्कूल के वातावरण की स्वच्छता पर तत्काल ध्यान देना उनके स्वास्थ्य से सम्बन्धित आदतों को सुदृढ़ कर सकता है। आगे यह आदतें उनके घरों तक भी पहुँचेंगी। व्यक्तिगत स्वच्छता की बेहतर आदतें डालना जैसे कि नाखून काटना, हाथ धोना और शारीरिक सम्पर्क के बारे में ध्यान रखना आदि वायरस के संचारण को रोकेंगे।

समग्र शैक्षिक दृष्टिकोण के माध्यम से, शिक्षक बच्चों को पोषक तत्वों से भरपूर आहार लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं, जिसमें मौसमी अनाज, फल और सब्ज़ियाँ शामिल हैं। इसके साथ ही बच्चों को यह भी सिखाना चाहिए कि प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों और प्रतिरक्षा कमज़ोर करने वाले चीनी की अत्यधिक मात्रा वाले पेय पदार्थों का सेवन करने से उन्हें बचना चाहिए। श्वसन से सम्बन्धित व्यायाम और शारीरिक गतिविधियाँ एक अन्य आयाम है जिससे व्यक्तिगत और समूह-प्रतिरक्षा (Herd Immunity) को बढ़ाने में मदद मिलेगी।

कार्यवाही के लिए एक मॉडल

देश भर में कोविड-19 से मुक़ाबला करने के लिए रणनीतियों और युक्तियों का पाँच चरणों वाला मॉडल है – I N D I A

I - इन्स्पायर (प्रेरित करना)

पहला क़दम होगा कि कक्षा के हर स्तर पर शिक्षकों को प्रेरित किया जाए ताकि वे अपनी कक्षा में बच्चों के स्वास्थ्य से सम्बन्धित अतिरिक्त ज़िम्मेदारी को स्वेच्छा से स्वीकार करें। अमूमन शिक्षकों पर काम का अत्यधिक बोझ होता है। यह चुनौती देश भर में शिक्षकों की भारी कमी के कारण और भी बढ़ जाती है, इसलिए ज़रूरी है कि इस अप्रत्याशित महामारी के जवाब में, स्वास्थ्य मिशन के लिए नए शिक्षकों को भर्ती किया जाए।

ऐतिहासिक रूप से देखें तो भारत में विद्यार्थियों के जीवन में शिक्षक की भूमिका को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना जाता है। वे समाज को आकार देने में भी ख़ास भूमिका निभाते हैं। इस

I N D I A - हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कोविड-19 महामारी के जवाब में वैश्विक विचार-नेतृत्व का एक मॉडल

	I	N	D	I	A
	इन्स्पायर	**नर्चर**	**डॉक्यूमेंट**	**इंस्ट्रक्ट**	**एक्शन**
क्या?	कक्षा के हर स्तर पर शिक्षकों को प्रेरित करना ताकि वे प्रासंगिक स्थानीय संस्कृति और सर्वोत्तम प्रथाओं पर निर्मित स्वास्थ्य के दूत बनें। समाज के स्वास्थ्य को आकार देने में कर्तव्य के रूप में अपनी भूमिका देख पाने में उनकी मदद करना।	स्थानीय प्रोटोकॉल और सामग्री से लैस करना। विद्यार्थियों और समुदायों की आवश्यकताओं पर ध्यान देते हुए वृद्धिशील नवीन तरीक़ों का पता लगाना।	रिकॉर्ड रखना (स्वास्थ्य, भोजन का सेवन, लक्षण, आस-पड़ोस में कोविड-19 के मामले) और एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में साक्ष्य जुटाना।	रोग के जोखिम को कम करने के लिए व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वच्छता अभ्यास। मिथकों और नकारात्मक जुड़ाव को कम करना।	परिणामों को मापने की प्रतिबद्धता के साथ-साथ कार्यवाही करना सतत नवाचार और परिष्कृत मॉडल बनाना।
कैसे?	शिक्षकों से कोविड-19 के खिलाफ़ लड़ाई में शामिल होने की अपील करने के लिए लघु वीडियो, डिजिटल और मुद्रित सहायक सामग्री।	विद्यार्थियों के साथ नियमित रूप से खुली चर्चा (उदाहरण रोज़ाना 15 मिनट), जिसमें वे अपने विचारों, सरोकारों, भय और प्रश्नों को निसंकोच रख सकें।	डेटा विश्लेषण और मशीन अधिगम को सक्षम करने के लिए डिजिटल सर्वेक्षण और व्यक्तिगत स्वास्थ्य रिकॉर्ड के डिजिटल लॉग्स का संकलन।	व्यक्तिगत स्वच्छता और सामुदायिक समर्थन की आवश्यकता पर ज़ोर देते हुए गीत, वर्कशीट्स, शिक्षक समर्थनकारी सामग्री आदि बनाकर देना।	समुदाय में समर्थन कार्यवाही राष्ट्रीय लीडरबोर्ड, पुरस्कार और आर्थिक पुरस्कारों के गठन द्वारा योगदान को मान्यता देना।

हमारे देश की महत्त्वपूर्ण पूंजियों में से एक यानी हमारे शिक्षकों की भागीदारी को लागू करने की एक पुनरावृत्तीय रूपरेखा

सन्देश को शिक्षकों के प्रति समाज की ज़िम्मेदारी के रूप में रूपान्तरित होना चाहिए; इस महामारी के प्रति हमारे समाज की प्रतिक्रिया के रूप में, शिक्षकों को एक उत्कृष्ट स्थान पर बहाल किया जाना चाहिए। इसलिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक स्वेच्छा से अपने कार्यों की सूची में बच्चों के स्वास्थ्य की ज़िम्मेदारी को भी जोड़ लें, क्योंकि जब वे स्व-प्रेरणा से इस कार्य में भागीदारी करेंगे तो परिणाम भी अच्छे होंगे।

वर्तमान में, जब महामारी से लड़ाई के हमारे प्रयासों में शिक्षकों को अग्रिम पंक्ति के रक्षकों के रूप में उभरने का अवसर मिला है तो यह भी ज़रूरी है कि क्रियात्मक समाधान के सह-निर्माण में शिक्षकों को अपने सुझाव देने की स्वतंत्रता दी जाए ताकि उनके मन में स्वामित्व की भावना विकसित हो।

सुझाव

शिक्षक अपने सहकर्मियों की भर्ती में मदद करने के लिए छोटे ऑडियो/वीडियो सन्देश रिकॉर्ड कर सकते हैं या फिर कोविड-19 के खिलाफ लड़ाई में शामिल होने के लिए शिक्षकों से अपील करने के लिए उनके साथ शिक्षक संगोष्ठी या कार्यशालाएँ भी आयोजित कर सकते हैं। एक छोटा वीडियो या विज्ञापन डिजिटल सहायक सामग्री के रूप में विकसित किया जा सकता है।

N - नर्चर (पोषण/विकसन)

दूसरा क़दम शिक्षकों को प्रोटोकॉल और सामग्री से लैस करना है जो स्थानीय अभ्यासों और रीति-रिवाजों को ध्यान में रखते हुए साक्ष्य-आधारित और वैज्ञानिक हों।

वैश्विक कोविड-19 के लिए यह बात तो तय है कि पूरी मानव आबादी के लिए एक से समाधान नहीं हो सकते। हमारे देश के कुछ हिस्सों में और हमारी आबादी के बड़े क्षेत्रों में शारीरिक दूरी, हाथों को साफ़ करना और हाथ धोना व्यावहारिक नहीं हो सकता है। लेकिन हम स्वच्छता में सुधार के लिए स्थानीय और सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक तरीक़ों का पता लगा सकते हैं और शिक्षक उन्हें चुनने में अपने विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं। इसलिए यह ज़रूरी है कि सर्वोत्तम अभ्यासों के डिजिटल भण्डार के माध्यम से व्यापक समाधान दिए जाएँ। इस महामारी के दौरान बच्चों को अतिरिक्त ध्यान और पोषण की आवश्यकता है।

सुझाव

(क) शिक्षक रोज़ अपनी कक्षा में विद्यार्थियों के साथ एक खुली चर्चा को प्रोत्साहित करने के लिए 10-15 मिनट का सर्कल समय आयोजित कर सकते हैं। इसमें बच्चे कोविड-19 के बारे में अपने विचारों, सरोकारों, भय

और प्रश्नों को व्यक्त कर सकते हैं। यह प्रक्रिया बच्चों को अच्छी स्वच्छता और आदतों का वाहक बना सकती है और वे अपने घरों में परिवर्तन लाने का कार्य सफलतापूर्वक कर सकते हैं।

(ख) इन मुद्दों पर चर्चाओं के दौरान लगता है कि किसी बच्चे को कोई दिक़्क़त है तो शिक्षक उसके साथ अतिरिक्त समय लगा सकते हैं। आवश्यक हो तो बच्चे के परिवार के साथ मिलकर उसे हल कर सकते हैं।

D – डॉक्यूमेंट (दस्तावेज़ीकरण)

रिकॉर्ड रखना और सबूत इकट्ठा करना, वैज्ञानिक जाँच और अभ्यास का एक महत्त्वपूर्ण घटक है। कक्षा के लॉग या स्वास्थ्य रिकॉर्ड जैसे सरल तरीक़े कोरोनावायरस के मामले और संचरण का पता लगाने में मदद करेंगे। शिक्षकों की उपस्थिति और अनुपस्थिति के कारण का रिकॉर्ड रखने की आवश्यकता होगी। बच्चों को एक दैनिक डायरी बनाने के लिए कहा जा सकता है। इसका उपयोग उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी ख़तरों के कारकों का आकलन करने, रिकॉर्ड करने और उनके घरों में निम्नलिखित गतिविधियों का दस्तावेज़ीकरण करने के लिए किया जा सकता है :

- भोजन के सेवन की मात्रा और एक बार में कितना भोजन परोसा गया।
- बीमारी के व्यक्तिगत लक्षण।
- परिवार के निकट सदस्यों और देखभाल करने वालों के स्वास्थ्य सम्बन्धी लक्षण।
- आस-पड़ोस में कोविड-19 के मामले।

सुझाव

(क) शिक्षकों के लिए आसानी से उपलब्ध एवं कम-तकनीकी वाले डिजिटल और गैर-डिजिटल तरीक़ों की सहायता से रिकॉर्ड रखने की प्रक्रिया को प्रोत्साहित करना चाहिए।

(ख) विधिमान्य भौतिक या डिजिटल सर्वेक्षण : शिक्षक, लॉग को विकसित कर सकते हैं ताकि वे सरल, आयु-उपयुक्त रिकॉर्ड रखने वाले उपकरण प्रदान कर सकें जो स्थानीय भाषा में हों और जिसे बच्चे समझ सकते हों। बहुत सारे भौतिक रिकॉर्डों से निपटने में व्यावहारिक चुनौतियाँ होती हैं, इसलिए पेपर-आधारित प्रलेखन प्रक्रिया से बचने की सिफ़ारिश की जाती है। इसके अलावा डिजिटल प्रारूप होने से डेटा-विश्लेषण में भी आसानी होती है।

(ग) प्रौद्योगिकी उपकरणों और विश्लेषणों से बड़े स्तर पर लागू करने योग्य (scalable) और डेटा-संचालित सर्वोत्तम अभ्यासों को सुनिश्चित किया जा सकता है ताकि शिक्षकों पर बोझ को कम करने के लिए कुशल तरीक़े सुनिश्चित किए जा सकें।

I – इंस्ट्रक्ट (निर्देश)

वायरस के जोखिम को कम करने के लिए शिक्षक व्यक्तिगत और सामुदायिक स्वच्छता के तरीक़ों के बारे में बात कर सकते हैं। जैसे कि सार्वजनिक स्थानों में न थूकना, नाखून काटना, जहाँ सम्भव हो वहाँ सतहों से शारीरिक सम्पर्क को सीमित करना, जहाँ सम्भव हो दूरी बनाना, जब सम्भव हो हाथ धोना, प्राकृतिक क्लींज़र, कीटाणुनाशकों का उपयोग और ऐसे रसायनों के ख़तरे, छींकते समय नाक और मुँह को ढँकना और स्वच्छता के स्तर को ऊपर उठाना आदि। बच्चों को भारत की उन पारम्परिक स्वच्छता-प्रथाओं से अवगत कराया जा सकता है जो धीरे-धीरे लुप्त हो रही हैं जैसे कि घर में प्रवेश करने से पहले हाथ, चेहरा और पैर धोना आदि। यह प्रासंगिक सांस्कृतिक परम्पराएँ हमें अपनी प्राचीन विरासत और प्रथाओं से जोड़कर पहले से मौजूद मानदण्डों में से व्यवहार्य अभ्यासों को फिर से अपनाने में मदद कर सकती हैं।

हो सकता है कि कोविड-19 से संक्रमित होने पर बच्चों और उनके परिवारों को पूर्वाग्रह और सामाजिक कलंक का सामना करना पड़े। इसलिए यह ज़रूरी है कि शिक्षक और शिक्षण-सामग्री उनका मुकाबला करने के लिए सामुदायिक समर्थन की आवश्यकता पर ज़ोर दें। इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि जिन्हें यह बीमारी हो जाती है उनमें संक्रमण का ख़तरा बढ़ सकता है, इसलिए उन्हें सहानुभूति और समानुभूति की आवश्यकता होती है।

बच्चों और उनके परिवारों को सिखाना चाहिए कि भविष्य में भी कोविड-19 के बने रहने की सम्भावना है। भारत में यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि शारीरिक दूरी और स्वच्छता के कई एहतियाती, रोकथाम के उपायों से अस्पृश्यता के घृणित अवशेष जागृत होने की सम्भावना है। अतः यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह सामाजिक बुराई फिर से अपना सिर न उठाए; जिस सामाजिक एकीकरण को पाने में दशकों लगे उसे कोविड-19 अनजाने में ही ख़त्म न कर दे।

सुझाव

(क) जहाँ भी सम्भव हो, कार्टून शैली के पात्रों को दर्शाने वाले शिक्षण-उपकरण और भाषा-तटस्थ (language-agnostic) डिजिटल सामग्री को विकसित किया जा सकता है, जिसका उपयोग शिक्षक अपने शिक्षण के दौरान कर सकते हैं।

(ख) शिक्षकगण सामग्री के एक केन्द्रीय भण्डार का उपयोग कर सकते हैं जो उन्हें स्थान के आधार पर प्रभावी ढंग से आदतों को सम्प्रेषित करने में मदद कर सके, ताकि किसी क्षेत्र (गाँव, पड़ोस, नगर पालिका, जिला, राज्य, क्षेत्र, आदि) के अनुसार आसानी से खोजी जा सकने वाली सामग्री सुनिश्चित की जा सके।

(ग) शिक्षक और बच्चे गीतों की रचना कर सकते हैं। इन्हें अभिनय के साथ गाने से वे गीतों से तो परिचित होगे ही, साथ ही इनसे स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतों को सुदृढ़ करने में भी मदद मिलेगी।

(घ) शिक्षकगण कलाकारी में भी बच्चों की मदद कर सकते हैं। जैसे कि अपने सहपाठियों के लिए चित्र, पेंटिंग, पोस्टकार्ड या वीडियो सन्देश बनाना और 'गेट वेल या स्वस्थ हो जाओ' जैसे कार्ड उन्हें देकर उनके प्रति अपनी एकजुटता और एकीकृत समर्थन व्यक्त कर सकते हैं। इस अभ्यास से बच्चों की एक ऐसी पीढ़ी विकसित होगी जो अपने आस-पास के लोगों की कठिनाइयों/ ख़तरों के प्रति संवेदनशील है।

(ङ) रोल-प्ले और थिएटर-कार्यशालाओं से, बच्चों को महामारी की जटिलताओं और बारीकियों का अनुभव करवाया जा सकता है।

A – एक्शन (कार्यवाही)

इस कार्य की असली सफलता तभी मापी जा सकती है जब इन विचारों को कार्य रूप में परिवर्तित किया जाए। वर्तमान महामारी और इससे पैदा हुए ख़तरे का व्यापक प्रसार और पैमाना देखते हुए ज़रुरत है कि व्यावहारिक परिणामों पर कहीं अधिक गहराई से विचार-विमर्श किया जाए। कार्यवाही पर ध्यान केन्द्रित करना, परिणामों को मापना और साक्ष्यों के आधार पर उसे दुरुस्त करना – इन बातों से एक ऐसा मॉडल बनेगा जो निरन्तर नवाचार और परिष्करण पर आधारित होगा। यह अवलोकन के विज्ञान-आधारित फ्रेमवर्क का मार्ग भी प्रशस्त करता है, जिसके माध्यम से डेटा वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न पहलुओं पर शोध किया जा सकता है।

महामारी के दौरान मॉडल के इस महत्त्वपूर्ण घटक की उपेक्षा होने का काफ़ी ख़तरा है। इसके महत्त्व को रेखांकित करना ज़रूरी है क्योंकि यह साक्ष्य-आधारित अभ्यास के माध्यम से, हमारी शिक्षा प्रणाली के सबसे बड़े सामाजिक स्तम्भ को लागू करने की एक मज़बूत प्रणाली स्थापित करता है।

सुझाव

(क) शिक्षकों को अपने कार्यों के लिए समाज में परिवर्तन एजेंटों के रूप में पहचाना जा सकता है।

(ख) मापने योग्य मैट्रिक्स इस प्रकार से हो सकते हैं :

(i) बच्चों से प्राप्त पूर्ण रिकॉर्डों की संख्या।

(ii) शिक्षक द्वारा प्रभावित बच्चों की संख्या और कक्षा में बच्चों की कुल संख्या का अनुपात।

(ग) एक अन्य महत्त्वपूर्ण कारक यह है कि क्या शिक्षक ने एक ऐसी आबादी में संचालन और सेवा की जहाँ कोविड-19 के उच्च मामले और जोखिम ज़्यादा था।

(घ) प्रत्येक ज़िले और क्षेत्र में, हर महीने एक रोल-मॉडल शिक्षक चुनने और हर महीने उन्हें सम्मानित करने की एक प्रणाली बनाई जा सकती है।

अन्ततः

अन्त में यह कहा जा सकता है कि INDIA हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से हमारी प्रतिक्रिया के बारे में सोच-विचार के मॉडल का एक ख़ाका है। इसका उद्देश्य हमारे देश की महत्त्वपूर्ण पूंजियों में से एक यानी हमारे शिक्षकों की भागीदारी को लागू करने के एक पुनरावृत्तीय ढाँचे के रूप में काम करना है।

INDIA मॉडल, प्रतिक्रिया के समग्र मॉडल के माध्यम से कम लागत और कार्यवाही योग्य उपकरणों की पेशकश करने का प्रयास करता है।

लम्बी अवधि में नवाचार प्रौद्योगिकी-सक्षम यह फ्रेमवर्क दुनिया के लिए अनुकूलनीय स्थानीय समाधानों का एक नया वैज्ञानिक ख़ाका प्रस्तुत कर सकता है। एक राष्ट्र के रूप में हमारे तेज़ी से बढ़ते डिजिटल रूपान्तरण का लाभ लेते हुए जहाँ सम्भव हो, इस नवाचार को बड़े पैमाने पर लागू करने योग्य प्रौद्योगिकियों के मंच में व्यवस्थित किया जा सकता है।

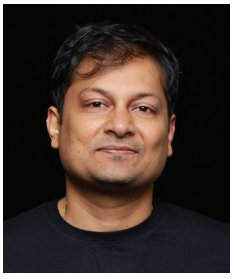

भार्गव श्री प्रकाश फ्रेंड्सलर्न के संस्थापक और सीईओ हैं – जो पालो ऑल्टो, कैलिफोर्निया और चेन्नई, भारत में स्थित जीवविज्ञान और स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी का स्टार्ट-अप है। वे एक इंजीनियर, डिज़ाइनर, आविष्कारक और सीरियल उद्यमी हैं। उन्हें डिजिटल-वैक्सीन का अग्रणी माना जाता है, जो प्रौद्योगिकी-सक्षम रोग निवारण की श्रेणी है। सिमुलेशन टेक्नॉलॉजी और वर्चुअल रिएलिटी में उनके पाँच पेटेंट हैं। वे डिजिटल वैक्सीन प्रोजेक्ट, कार्नेगी मेलन विश्वविद्यालय में फाउंडिंग रिसर्च ट्रान्सलेशन और इनोवेटिव पार्टनर के रूप में कार्य करते हैं। भार्गव श्री प्रकाश ने यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन, एन आर्बर से ऑटोमोटिव इंजीनियरिंग में परास्नातक किया है। उनसे **bhargav@friendslearn.com** पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल

यह प्रयास किया गया है कि प्रतिभागियों की संख्या फेस-टू-फेस कार्यक्रम के समान हो। लेकिन वेबिनार की बात अलग है, जिसमें वक्ता एक मुख्य विषय पर अपने विचार रखते हैं और समय-समय पर दर्शकों से सवाल या टिप्पणियाँ आमंत्रित की जाती हैं। हालाँकि वेबिनार इस अर्थ में उपयोगी हैं कि उनसे लोगों के एक बड़े समूह तक पहुँचा जा सकता है, लेकिन उनका उद्देश्य प्रतिभागियों को जानकारी देना या उन्मुख करना है न कि केन्द्रित रूप से उन्हें किसी विचार के साथ जुड़ने में मदद करना।

- निमरत खण्डपुर, 'ऑनलाइन व्यावसायिक विकास कार्यक्रम : कुछ विचार' , पेज 79